# पाठ 16. कबीर के दोहे

## पाठ की भूमिका

इस पाठ का उद्देश्य बच्चों में रचनात्मक विचार संबंधी कौशल विकसित करना है ताकि वे चीज़ों व घटनाओं को देखने और करने का अभिनव तरीका अपना सकें। हमारे संत कवियों ने जीवन की जो समझ दोहों के रूप में संजोकर रख दी है वह हमेशा याद रखने योग्य है। चाहे बात समय के महत्व की हो, अपने दिल के भीतर झाँककर स्वयं को तोलने की या फिर यह कि हमें अपनी वाणी और विचार पर कब, कितना संयम रखना चाहिए, ये दोहे सदा हमारे मार्गदर्शक बने रहने की योग्यता रखते हैं।

## पाठ का सार

समय किसी के लिए रुकता नहीं है इसलिए जो काम जिस समय के लिए निश्चित है उसे उसी समय कर लेना चाहिए। किसी और पर उँगली उठाने से पहले हमें देख लेना चाहिए कि हमारे भीतर किस तरह की कमियाँ बसी हुई हैं।

किसी कमज़ोर को सताना अन्याय भी है और मनुष्यता के प्रति अपराध भी।

जो संत स्वभाव के लोग होते हैं, वे अपनी शक्ति और अपने साधनों का इस्तेमाल दूसरों की भलाई के लिए करते हैं।

कवि आशा करते हैं कि हमें सदैव मीठी व सच्ची वाणी में बात करनी चाहिए जिससे स्वयं भी और दूसरों के मन को भी शांति मिले।

कवि हमसे यह उम्मीद कर रहे हैं कि हम ऐसे वृक्ष बनें, जो दूसरों को छाया, फूल और फल देने में अपने जीवन को सफल समझते हैं।

## अध्यापन संकेत

- **मूल पाठ के लिए संकेत**

  बच्चों से दोहों को लय में पढ़वाएँ। शब्दों के अर्थ–सामान्य व विशिष्ट–बताते चलें। इन दोहों से मिलने वाली सीख को दैनिक जीवन से जोड़कर बतलाएँ। परमार्थी, सहायता, मीठे वचन आदि के बारे में विशेष ध्यान दिलाएँ। यह भी बताएँ कि इन नैतिक गुणों पर हमारे व्यक्तित्व निर्माण की नींव टिकी है। मानवता के अन्य गुणों की भी चर्चा करें।

- **अभ्यास प्रश्नों के लिए संकेत**
  - **मौखिक प्रश्नों, पहेलियों, पठित परिच्छेद** व **पाठ आधारित प्रश्नों** के अध्यापन संकेत हेतु **पृष्ठ संख्या 65** देखें।
  - **भाषा आधारित प्रश्नों** का उद्देश्य हिंदी भाषा के व्याकरण-पक्ष को सुदृढ़ करना है।
  - कबीरदास के दोहों में आम बोलचाल की भाषा से लिए गए शब्दों का प्रयोग हुआ है। इनके हिंदी पर्याय समझाएँ।
  - विलोम शब्द से बच्चे परिचित हैं। उन्हें विलोम शब्दों से वाक्य बनाने के लिए प्रेरित किया जा सकता है।
- **क्रियाकलाप के लिए संकेत**
  - इस क्रियाकलाप से बच्चे आत्ममंथन व आत्मचिंतन कर सकेंगे।